GNITED MINDS
Journals

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XI, July-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

बिहारी के काव्य में बहुज्ञता

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XI, July-2013, ISSN 2230-7540

बिहारी के काव्य में बहुज्ञता

Sarika

---------------------------------x---------------------------------

बिहारी हिन्दी साहित्य के एक ऐसे सितारे हैं जिन्होंने केवल एक पुस्तक लिखकर अपना नाम अमर कर लिया। बिहारी सतसई नामक उनके ग्रन्थ में मुख्य रस तो श्रृंगार है लेकिन बिहारी की प्रतिभा इस काव्य में और बहुत से ज्ञान के ऐसे बिन्दुओं से भी अच्छी तरह परिचित है। प्रत्येक कवि के विषय में यह कहा जाता है कि वह परम बु(िमानी, विचारशील, व्यापक दृष्टिकोण वाला और प्रतिभा सम्पन्न होता है और वह अपने वैद्य की अनुभूतियों को अभिव्यक्तियों के द्वार तक पहुंचाने के लिए विविध क्षेत्रों से तथ्यों का संकलन करता है तथा इसी लिए कवि के संबंध में कहा जाता है कि 'जहां न पंहुचे रवि, वहां पहुंचे कवि।'

बहुज्ञता का अर्थ है कवि द्वारा व्यापक दृष्टि रखना अर्थात् अपने ज्ञान को सीमित न करके असीमित करना। जिस कवि में बहुज्ञता जितनी अधिक होगी उसकी कविता उतनी ही परिष्कृत, आकर्षक व प्रौढ़ होकर सामने आती है।

रीतिकाल के रीतिसि(कवि बिहारी मुक्तक के गम्भीर कवि हैं जिन्हें लोकपक्ष और शास्त्रा का समान ज्ञान था। वे एक निपुण कवि थे जो समय और स्थिति के अनुसार भाव और कल्पना में सामजंस्य कर लेते थे बिहारी को कुल 18 शास्त्रों का ज्ञान था, जिनमें भक्ति विचार, नीति विज्ञान, राजनीति, ज्योतिष, चिकित्सा, वैद्य, गणित, अर्थशास्त्रा, प्रकृतिज्ञान, मनोविज्ञान आदिअनेक विषयों की जानकारी के संकेत उनके काव्य में मिलते हैं। अतः बिहारी को श्रृंगारिक कवि के साथ–साथ बहुज्ञता कवि भी कहा जाता है।

ज्योतिशास्त्रा का ज्ञान : बिहारी सतसई के दोहों में बिहारी ने ज्योतिष में विशेष रूचि दिखाई है बिहारी ने ज्योतिष शास्त्रा का ज्ञान संस्कृत अध्ययन के दौरान ही ग्रहण किया था। ये सि(ांत भी इतने सामान्य नहीं है जो सर्वसाधरण में प्रचलित रहे हों। ज्योतिष के अनुसार यह सिं(ात है कि यदि मंगल, चन्द्रमा और बृहस्पति एक ही नाड़ी के चारों नक्षत्रों में से किसी एक पर पड़ता है कि अत्यधिक वर्षा होती है यह सि(ात ''नरपति जयचर्चा'' नामक ग्रंथ में आया है तथा कहा गया है कि –

''एक नाड़ी सामारूढौ चन्द्रधरणी सुतौ।।

यदि तत्र भवेज्जीवस्तदेकार्णविता मही।।''

बिहारी ने इसी सिद्धंत को अपने एक दोहे में इस प्रकार स्पष्ट किया है।

''मंगल बिन्दु सुरंग, मुख ससि केसारि आड़ गुरू।।

इक नारी लहिं संग रसमय किये लोचन जगता।।''

बिहारी ने अपने इस दोहे के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि नायिका के मस्तक पर लगी हुई लाल बिन्दी मंगल है, मुख चन्द्रमा और केसर का पीला तिलक बृहस्पति है तथा इन सब को एक ही नारी ने धरण कर रखा है। जिससे सम्पूर्ण जगत के नेत्रा रसमय हो गये हैं।

ज्योतिषशास्त्रा का दूसरा सि(ात यह है कि यदि शनिश्चर, तुला, ध्नु, या मीन में हो अथवा लग्न में पड़ा हो तो जातक स्वयं राजा होता है या फिर राजवंश करने वाला होता है। बिहारी ने अपने दोहे के माध्यम से इसी को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। उदाहरण द्रष्टव्य है–

''सनि कज्जल चख, झक लगन, उपज्यौ सुदिन सनेह।

क्यो न नृपति हवै भेगिबै लहि सुदेस सब देह।।''

बिहारी ने अपने एक अन्य दोहे के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि यदि चन्द्रमा में कोई सौम्य ग्रह पड़ा हो और वह केन्द्र में ग्यारहवें स्थान अथवा त्रिकोण में विद्यमान हो, तो ध्नागमराजमान और संतान प्राप्ति अनेक सुख प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ–

''तिय–मुख लखि हीरा जरी बेंदी बढै विनोद।

सुत सनेह मानौ लिचौ विधु पूरन बुध गोद।।

उपर्युक्त दोहों के आधर पर कहा जा सकता है कि बिहारी को ज्योतिष का अच्छा ज्ञान था किन्तु इस ज्ञान के कारण बिहारी ने दोहों में रसमयता बाध्ति–सी लगती है क्योंकि जो साधरण पाठक होता है वह ज्योतिष से संबंधित इन दोहों के अर्थ की गहराई को नहीं समझ पाता है और इन्हीं में उलझ कर रह जाता है। मैं यह नहीं कहना चाहती कि इतना ज्ञान नहीं होना चाहिए परन्तु ज्ञान का प्रयोग पाण्डित्य प्रदर्शन या चमत्कार प्रदर्शन के लिए ही किया जाना चाहिए।

आयुर्वेद शास्त्रा का ज्ञान : कविवर बिहारी के दोहो में ज्यातिषशास्त्रा के ज्ञान के साथ–साथ आयुर्वेदशास्त्रा का ज्ञान परिलक्षित होता है। बिहारी ने अपने दोहों में जहां आयुर्वेदशास्त्रा के ज्ञान की बाते कही हैं उसे सामान्य व्यक्ति भी सरलता से समझ सकता है। बिहारी का एक दोहा देखिए जिसमें तीव्र ज्वर को रस के माध्यम से दूर करने की बात कही गई है। उदाहरण द्रष्टव्य है–

''हरि हरि बरि बरि उठति है करि करि थकी उपाड़।

वहई रोग–निदानु वहै–वैद औषधि बहे''

www.ignited.in

इन दोहों में आयुर्वेद का कोई साधरण ज्ञान दिखाई नहीं देता। वैद्य, औषधि, रोग–निदान, नाड़ी, पारा, विषय ज्वर, सुदर्शन चूर्ण आदि शब्दों से सामानय जन भी भली–भांति परिचित है। केवल इसी आधर पर यह मान लिया गया है बिहारी को आयुर्वेद का ज्ञान था।

गणित शास्त्रा का ज्ञान : हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत बिहारी सतसई की जिन आलोचकों ने आलोचना की है उन्होंने बिहारी को श्रेष्ठ गणितज्ञ बतलाया है, परन्तु बिहारी सतसई में गणित से संबंधित केवल दो ही दोहे मिलते हैं।

"कुटिल अलक छुटि परत मुखि बढिगै इतौ उदोतु।

बंक बकारी देत ज्यौ दामु रूपैया होतु।।

"कहत सबै बैदी दिए आंकु उस गुणौ होतु।

तिय लिलार बैदी दिए अगनितु बढ़त उदोतु।।"

बिहारी के प्रथम दोहे में यह बात कही गई है कि यदि किसी अंक के आगे टेढ़ी उलकारी लगा दी जाती है तो उसका अर्थ रूपये का संकेत देने लगता है तथा दूसरे दोहे में यह बतलाया गया है कि किसी अंक के आगे शून्य को रख देने पर उस अंक का मान दस गुणा बढ़ जाता है। इस प्रकार इन दोनों ही दोहों के माध्यम से यह प्रतीत होता है बिहारी को गणितशास्त्रा का अच्छा ज्ञान था।

दर्शन एवं भक्ति का ज्ञान : बिहारी सतसई में बिहारी ने कुछ होने दार्शनिकता एवं भक्ति भावना से संबंधित रचे हैं तथा उन्होंने स्थान–स्थान पर अपने दार्शनिक ज्ञान का परिचय दिया है। एक दोहे के माध्यम से वह चमत्कार प्रदर्शन की दृष्टि से श्लेष के माध्यम से अपने दार्शनिक ज्ञान का परिचय देते हैं। उदाहरण द्रष्टव्य है–

"जोग जुगति सिखई सबै मनो महामुनि मैन।

चाहत प्रिय अद्वैतता, कानन सेवक (चारी) नैन।।"

बिहारी सतसई में ऐसे भी बहुत से ओर दोहे भी मिलते हैं परन्तु बिहारी दार्शनिक की अपेक्षा एक भक्त थे। वे भक्ति के लिए बाह्मा आडम्बरों का निषेध करते हुए आत्मशुद्ध पर अधिक बल देते थे। उदाहरण द्रष्टव्य है–

"जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ कामु।

मन कांचे नाचे वृथा, सांचे रांचे रामु।।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बिहारी दार्शनिक की अपेक्षा एक भक्त कवि अधिक है। उनकी भक्ति भावना ऐसी थी कि उन्होंने तीर्थयात्राा और मोक्ष तक का निषेध कर दिया है।

ऐतिहासिक एवं पौराणिक ज्ञान : बिहारी ने ऐसे दोहों की रचना भी की है जिनमें पौराणिकता एवं ऐतिहासिक आख्यान उपलब्ध होते हैं। बिहारी ने महाभारत व रामायण काल के उपमानों का वर्णन प्रस्तुत किया है। जिसमें दुर्योधन का जल स्तम्भ, गोवर्धन धरण, सीता की अग्नि परीक्षा आदि प्रसंग उपलब्ध होते हैं। उदाहरण द्रष्टव्य है–

"रहयौ ऐंचि अन्त न लहै, अवधि दुखासन वीर।

आली बाढ़त बिरह ज्यों पंचाली को चीर।।

बिहारी ने एक अन्य दोहे में पौराणिक शिव–कृष्ण के युद्व का संकेतित वर्णन किया है जो कवि बिहारी के पौराणिक ज्ञान को दर्शाता है। दाहरणार्थ–

"मोर मुकुट की चन्द्रकनि, यो राजत नंद नन्द।

मनु ससि–सेखर की अकस किये सेखर सत–चन्द।।"

नीतिशास्त्रा का ज्ञान : बिहारी की सतसई में नीति विषयक उक्तियों की भी प्रधनता रही है। बिहारी ने अपनी श्रृंगार परक कविता में जहां भी नीति का ज्ञान प्रस्तुत किया है वहां वे सहज ग्राह्य प्रतीत होती है। यदि वे 'नहि पराग–नही मधुर मधु' कहते हैं या 'स्वारथ सुकत व श्रम वृथा' जैसी बातें कहते हैं तो उनकी बात का गहरा प्रभाव पड़ता दिखाई देता है। यद्यपि बिहारी ने नीतिपरक दोहों को देखकर बिहारी को उच्चकोटि का नीतिकार नहीं कहा जा सकता परन्तु इससे उन्हें नीति का ज्ञाता अवश्य कहा जा सकता है। नीति पर दोहे द्रष्टव्य हैं–

"कनक–कनक तै सौ गुनी मादकता अधिकाए ।

या खाए बौराई जग, या पाइ बोराए।"

"कैसे छोटे नरनु तै, सरत बड़नु के काम।

मढ़यौ दमामौ जतु क्या, कहि चूहे के चाम।।"

"मरतु प्यासा पिंजरा परयौ, सबा समै के फैर।

आदरू दै दै बोलियतु, बायस बलि के बेर।।"

कर्मकाण्ड एवं कामशास्त्रा का ज्ञान : बिहारी सतसई में बिहारी के कुछ दोहे कर्मकाण्ड विषय ज्ञान संबंधित भी मिल जाते हैं। बिहारी का एक दोहा द्रष्टव्य है। जिसमें पाणिग्रहण संस्कार की छाया नजर आती है–

"स्वेद सलिलु रोमांच कुसु कहि दुलही अरू नाथ।

दियौ हियौ संग साथ कै हथलैवै ही हाथ।।"

बिहारी को कर्मकाण्ड ज्ञान के साथ–साथ कामशास्त्रा का भी ज्ञान था। कामशास्त्रीय ज्ञान से संबंधित होता है। बिहारी का नख–क्षत, विपरीत रति, दन्त–क्षत आदि का वर्णन कामशास्त्रा के अन्तर्गत ही आता है। काम शास्त्रा संबंधित दोहा द्रष्टव्य है–

"पलनु पीक, अंजनु अधर धरै महावरू भाल।

आज मिले सुभलो करी भले वनै हो लाल।।"

विविध क्षेत्रीय ज्ञान : बिहारी को विविध क्षेत्रों का ज्ञान भी था। इससे संबंधित बिहारी के कई दोहे मिल जाते हैं। बिहारी सतसई में बिहारी ने कहीं राजधर्म के विषय पर, कहीं समाज, मनोविज्ञान आदि पर अपने भाव प्रकट किये हैं। इस प्रकार बिहारी को केवल शास्त्रों का ही ज्ञान नहीं अपितु लोक का भी ज्ञान था। इस आधर पर उन्हें बहुज्ञ कहा जा सकता है।

राजनीति का ज्ञान : बिहारी को राजनीति शास्त्रा का भी ज्ञान था। राजधर्म में राज्य के सात अंग माने जाते हैं। स्वामी, अमात्य,

सुहत, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और बल। बिहारी ने एक दोहे में शरीर के अंगो की तुलना राज्य के अंगो से की है।

"अपने अंग के जानि कै जोबन–नृपति प्रवीन।

स्तन, मन, नैन, नितम्ब कौ बडौ इजाफा कीन।।"

यु(विद्या का ज्ञान : बिहारी को यु(विद्या का ज्ञान था। यु(विद्या का बिहारी ने जो चित्राण किया है उससे संबंध्ति दोहा द्रष्टव्य है–

"लखि दोरत प्रिय कर कटकु बाझ छुड़ान काजा।

बरूनी–वन गाढै दृगनु रही गुंढौ करि लाज।।

दुहरे शासन की नीति का ज्ञान : बिहारी एक दरबारी कवि थे अपने जीवन का कुछ अश दरबारी वातावरण में ही व्यतीत किया था। उन्होंने राजा जय सिंह के आश्रय में रहकर सतसई की रचना की भी तथा शाहजहां के दरबार में भी बिहारी का अच्छा मान–सम्मान होता था। इसी कारण उन्हें शासन के बारे में पूरा ज्ञान था। उन्होंने अपने दोहों में दुहरे शासन की चक्की में पिसने वाली प्रजा तथा राज्य की और से की जाने वाली अंध्रेगर्दी का चित्राण किया है। उदहारणार्थ–

"दुसह दुराज प्रजान कौ क्यो न बढै दुःख द्रन्द्व।

अधिक अंधेरों जग करत मिलि मावस रविचन्द्र।।"

तंत्रा–मंत्रा व टोने–टोटके का ज्ञान : बिहारी उस समय के समाज के बारे में भी सब कुछ जानते थे। इसिलिए उन्होंने उस समय विशेष की सामाजिक परिस्थितियों का चित्राण अपने दोहों के अन्तर्गत किया है। तत्कालीन समाज में जादू टोने में विश्वास रखा जाता है तथा उसके साथ टोना–टोटका करने वाली स्त्रियों को भी समाज में अच्छा नहीं समझा जाता था। उदाहरण द्रष्टव्य है–

"टुनहाई सब टोल में रही जु सौति कहाई।।"

विवाह में हथलेवा प्रथा का ज्ञान : बिहारी के समय में जनसाधरण में विवाह के अन्तर्गत हथ–लेवा प्रथा प्रचलित थी, जिसका ज्ञान बिहारी को पूर्ण रूप से था। कवि बिहारी ने इस प्रथा का चित्राण अपने दोहों के अन्तर्गत किया है। उदाहरण द्रष्टव्य है–

"दियौ हियौ संग हाथ कै हथलेवे ही हाथ।।"

हिन्दू त्यौहारों का ज्ञान : बिहारी को समाज में विभिन्न त्यौहारों का भी गहनता से ज्ञान था। उन्होंने अपने दोहों में त्यौहारों के अवसरों पर किये जाने वाले रीति–रिवाजों का चित्राण किया है। उदाहरण के लिए उन्होंने होली के अवसर पर फगवा देने की प्रथा का चित्राण किया है इस भाव से पूरित यह दोहा द्रष्टव्य है–

"त्यौं त्यौं निपट उदार है फगुआ देत वनै ना।।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि बिहारी को जन–जीवन का बहुत ज्ञान था। उनकी पर्यवेक्षण दृष्टि अध्कि पैनी व सूक्ष्म थी। फलस्वरूप बिहारी ने जिस चीज को देखा उसकी तह तक पहुंचने की कोशिश की है। इस आधर पर कहा जा सकता है कि बिहारी बहुज्ञ थे तथा उन्हें बहुत–से शास्त्राों का ज्ञान था।

उपर्युक्त विवेचन के आधर पर कहा जा सकता है कि बिहारी को जीवन के विविध पक्षों का भली–भांति ज्ञान था। उन्होंने इस ज्ञान का चित्राण अपनी रचना सतसई में स्थान–स्थान पर किया है, जो उनके बारे में प्रचलित श्रृंगार की धरणा को मिथ्या सिद्ध करता है।

सहायक ग्रंथ

बिहारी सतसई

1. बिहारी दिग्दर्शन – प्रो0 रामकुमार वर्मा
2. संक्षिप्त बिहारी – डॉ0 संसार चन्द
3. बिहारी सतसई – डॉ.0 हरिचरण शर्मा
4. कविवर बिहारी लाल और उसका युग– डॉ0 रणधीर सिंह
5. बिहारी और उनका साहित्य – डॉ0 हरिवंश लाल शर्मा
6. बिहारी सतसई – डॉ0 नेमीचन्द जैन

प्रस्तुतकर्तृ ——— डॉ0 सारिका